सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

✪ सच्चे पातशाह जी वलों खतां दे उतर हरि संगत दे नाम ✪

(हरचन्द सिँघ दा भरा जो कि मिलटरी विच्च सरवस करदा सी, उस ने हज़ूर शहनशाह जी नूं चिट्ठी विच्च ताअने दिते अते लिखवया कि जदों दा मैं आप दे चरनां विच्च लग्गया हां, मेरा हत्थ घाटे वल नूं जांदा है, मेरे सारे साथी सूबेदार कैप्टन बणे होए हन।)

आप दा ख़त मिल्या, धन्नवादी हां। आप ने जो कुछ लिखवया है, सो ठीक है। सानूं सूबेदारीआं अते कपतानीआं दी लोड़ नहीं, अते नाही असीं एह लालच देंदे हां जी। माया मूर्खता दा प्यार है, गुरमुख कदे संसारी वस्तू दे अधीन नहीं हुंदे। भगत दे विरुध सदा ही संसार हुंदा है, परन्तु उह आपणी मंज़ल नूं सिध्धे जांदे हन। उन्हां नूं भुक्ख दुःख अमीरी गरीबी दी कोई परवाह नहीं हुंदी। इक्क आपणे मालक नूं मिलण दा चा हुंदा, जिस नूं मिल के सर्ब सुखां दा मालक बण जांदा है जी। मेरे वलों आप नूं सति श्री अकाल।

दस्तख़त सच्चे पातशाह जी

★ ★ ★ ★ ★

★ पूना हरि संगत नूं सच्चे पातशाह जी वलों उन्हां दे खत दा उतर ★

आप जी दा ख़त मिल गिआ है जी। आप ने कोई फिकर ना करना जी। अजे तक्क समझ नहीं आउँदी कह फुट्ट दा कारन की है। क्योंकि थोड़ी संगत रास्ते बहुत, इस्दा मतलब है कि सच नाल झूठ दा मेल है, जेहड़ा दो धारां कर दिन्दा है। संगत इसनूं कहा नहीं जा सकदा, जिस संगत करने में शान्ति ना हो। आप ने एह सभ कुछ अक्खीं देखा है। आप नूं मैं इस वास्ते लिखा है कि जोड़ मेला ना करया करो जिस विच्च दुःख कलेश अशान्ति बदनामी है, उस कारज नूं करन दी लोड़ नहीं। बहुत कुझ हो रहा है जी। ऐसी भावना दा जोड़ मेला किसी वी प्रकार मनज़ूर नहीं है जी, खाह रोज़ क्यों ना करो। मनज़ूर है प्रेम भावना जी। मेरे वलों सर्ब नूं सति श्री अकाल परवान होवे जी।

हज़ूर सच्चे पातशाह जी दे दस्तख़त

★ ★ ★ ★ ★

१६-५-१६५५

""सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै"" शब्द सिरफ़ इतना ही है मगर रहित कठिन है जी । मास शराब तजौणा, जगत दे मेहणे झल्लणे, लोक लज्जया त्यागणी, आत्म सुरत शब्द दा मेल करके जगौणी।

हज़ूर सच्चे पातशाह जी दे दस्तख़त

★ ★ ★ ★ ★

★ ★ ★ ★ ★

★ इट्टारसी हरि संगत नूं पत्र दा उतर ★

२५-४-५६

सति श्री अकाल आप का ख़त मिल गिआ है। तमाम अहिवाल पढ़ कर बहुत खुशी हूई है। और जो आप ने आपणे दिल की तमन्ना प्रगट की है, वोह बिल्कुल ठीक है। आप की बेनती परवान हूआ करेगी जीउ। आप ने कोई फ़िकर ना करना जीउ, और पैड जिस तरां आप की मर्ज़ी होवे उसी तरां छपवा कर भेज देणा जीउ। और टोपन की बाबत पता चल गिआ है, और हम भी देहली मई के महीने आएंगे जीउ । और इट्टारसी में जिस वक्त समां मिला, ज़रूर आवेंगे और दर्शन आप के करेंगे जीउ। बाकी ख़रबूजा भेजने की आप इतनी तकलीफ़ क्यों करते रहते हो जीउ। बाकी जंगल का काम अगर अच्छा मिल सकता है तो आप ज़रूर करना जीउ। अगर आप को मदद के लीए आदमीउं की जरूरत होगी तो भेज देवेंगे जीउ, और दुकान का भी काम वी इसी तरां चलाई जाणा जीउ। क्योंकि जब भी हालात दा अन्तर हूआ तो इस जगा होणा है जिस जगा पर हम है । आप बेफ़िकर हो कर रहणा, कभी वक्त आवेगा कि आपने पास संगत का ..... मगर ये सभ कुछ अभी पड़दे में है। गुड़गाउँ के ऊपर वाला इलाका सेफ़ है और ये तो पहली लिखत हूई है। आप तो हिंदोस्तान के सैंटर में हो और हिंद के मालक हो। किसी किस्म दा फ़िकर ना करना, हर प्रकार रक्खया सहायता और बख्शिश होगी। और जंगलात के काम बारे तफ़सील देणी कि क्या काम और किस किस्म का होगा लक्कड़ी काटने का। बाकी मेरी तरफ़ से और सभ संगत की तरफ़ से संगत और बाल बच्चों को बहुत प्यार।

दस्तख़त हजूर सच्चे पातशाह जी

★ ★ ★ ★ ★

★ ★ ★ ★ ★

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

(एह महान विहार ज़िला अमृतसर तहसील तरन तारन पिण्ड साहबाज पुर विखे श्री गुरू अरजन देव जी पंजवें पातशाह जी दे समें श्री भगत सिँघ अते श्री जसवन्त सिँघ जी नाल वापरया जदों कि श्री भगत सिँघ उस वक्त सम्मण अते श्री जसवन्त सिँघ जी मूसण सन। पिण्ड साहबाजपुर विखे ही सम्मण ने मूसण दा सिर दे के संगत नूं प्रशाद छकाया सी। हज़ूर सच्चे पातशाह जी ने उन्हां नूं आपणे पवित्र कर कमलां नाल पत्र लिखया अते उनां दा पिछला परदा ही खोल्ह के लिख दिता है जीउ। सो इस प्रकार है जीउ :)

२१-५-१६५६

जेठूवाल दी तरां इट्टारसी नूं कुछ समें भाग लगेगा जी। अग्गे लिखत दस्सण तों बाहर वाली गल्ल है। आप जी दा लंगर सर्ब संगत दा भण्डार बणेगा जीउ। कदी वक्त सी सम्मण मूसण दा सिर दे के प्रशाद छकाया सी। अज्ज उस सिर दी कीमत पैण दा समां आया है। परंतू एह लफ़ज़ लिखण लग्गिआं मेरे अथरू बह गए, कि गुरसिखां दा पिछला कर्ज़ा किस तरां उतारना है । जिन्हां ने आपणे सिर नालों प्यारा लंगर समझिआ। एह कौतक सतिजुग दी धार पिछला प्यार अगे दे उधार है जी। मैं गरीब सामी हां। भगत सिँघ दे परीवार दा जन्म जन्म दा कर्ज़ा ज़रूर उतारांगा । मेरे पिछले शाह, हौली हौली वसूल करना। समें नाल किस्त मिलदी रहेगी। जसवन्त हुण लिखण दी ताकत नहीं, आप जी दे पिछले जन्म कर्म दे करतब अक्खां अग्गे नाच करदे हन। होर ना पुच्छ ना पुच्छ ना पुच्छ, तेरा देणा बड़ा है, मैं आप दा करज़ाई हां।

सच्चे पातशाह जी दे दस्तख़त

★ ★ ★ ★ ★

★ ★ ★ ★ ★

★ जसवन्त सिँघ जी (इट्टारसी हरि संगत) नूं पत्र दा उतर ★

आप जी दी उच्च विषेषता अते पूरब प्यार भरया पत्र पुज्जा जिस नूं पढ़ के बड़ी खुशी होई अते मैं आप जी दा अती धन्वादी हां। आप जी ने जो कुछ पुच्छयां है एह ममूली गल्लां हन। ज्ञानी पुरुष परमात्मा दी खोज विच्च हुंदा है। सतिजुग कलिजुग दा ज़िम्मेवार आप ईश्वर है, आप समझदार हो। सतिजुग दा साचा सरोवर पूरे सतिगुर निरगुण सरूप दे चरनां विच्च हो गिआ है जी।

आप हैरान होवोगे कि निरगुण दे चरन किथ्थे हन। परन्तु एह शब्द दा उतर, बीबी हरनाम कौर तों पुछ लैणा जी। हुण तां समां ऐसा आ रिहा है पहले सरोवर ही मिट रहे हन। सच्चा सरोवर हर प्राणी वास्ते उस दे काया मन्दर विच्च है। इस तों वड्डा सरोवर होर कोई नहीं है जी। की आप ने आपणे सरोवर नूं लभ्भण दी जुगती, बीबी जी तों प्राप्त कीती नहीं ? अगर इस सरोवर विच्च नहां के, काग हँस रूप बण गए, फिर आप नूं आपणे आप ही ज्ञान आ जावेगा, सरोवर की वस्तू है अते इस सच्चे सरोवर नूं कौण बणा सकदा है किसे जीव आत्मा दी ताकत नहीं जुग दी धार बदल देणी, सभ तों वड्डी गल है जी। अगर बीबी जी तों नेड़े पुच्छोगे ते तुहानूं छेती दस्स देणगे, बाकी फिर पुछ लैणा। अगर आप जी नूं बीबी हरनाम कौर ना दस्सण, तां टोपन राम तों पुच्छ लैणा कि सतिजुग कदों लगेगा। एहो ही आप नूं दस्स देणगे। सरोवर दा सतिजुग नाल कोई सबंध नहीं। एह चिठ्ठी दोपन राम नूं दे देणी ।

हज़ूर सच्चे पातशाह जी दे दस्तख़त

★ ★ ★ ★ ★

★ ★ ★ ★ ★

★ जसवन्त सिँघ जी (इट्टारसी हरि संगत) नूं उस दे पत्र दा उतर ★

जसवन्त चिन्ता दी कोई लोड़ नहीं अते ना ही करनी। जब मेरा नाता आप नाल है फिर किसे दे सहारे उत्ते रहण दी लोड़ नहीं । आप ने आपणे प्रेम प्यार विच्च मस्त रहणा जी अते इट्टारसी दी संगत कदे जबानी बदनाम नहीं हो सकदी, जिन्नां दा नाम धुर दी धार अते प्रेम प्यार दी कलम नाल लिखया गिआ है। गुरसिख नूं गुरसिख नाल प्यार करना संसारी है। परन्तु साहिब नाल प्यार करना आत्म परमात्म दा नाता है जेहड़ा ऐथ्थे ओथ्थे टुट नहीं सकदा, सारा संसार रुस्स जावे लड़ पवे वैरी हो जावे, परन्तु इक्क ना विसरे, जिस दा लेखा लिखत विच्च नहीं है। आप दे सिर ते सत दा ताज है अते आप इट्टारसी संगत दे मुख हो। मैं वी आप दे अधीन हां अते जो कुझ तेरा फ़रमाण होवे मैनूं स्वीकार करना पैंदा है। जसवन्त अगर तेरा जस मेरी ज़बान कलम शाही करदी है बाकी किस दी लोड़ है। आप ने कदे चिन्ता विच्च ना आउणा। इट्टारसी संगत मेरा अंग है, मेरा खून है, मेरा प्यार है, मेरा विहार है अते सच पुछ ते जसवन्त पूरबले जन्म दा यार मित्र अधारी अपार है। इस वास्ते मैं आप दा ज़ामन हां अते गवाह वी पक्का हां । जिस दी शहादत बदल नहीं सकदी अते आप ने कोई चिन्ता नहीं करनी। बीबी हरबंस कौर ठीक हो आवेगी। बच्चिआं नूं प्यार।

हज़ूर सच्चे पातशाह जी दे दस्तख़त

★ ★ ★ ★ ★

★ ★ ★ ★ ★

★ सुरिंदर सिँघ जी (इट्टारसी हरि संगत) नूं पत्र दा उतर ★

३०-१-१९६१

सुरिंदर जीउ, सति श्री अकाल, आप का ख़त मिला, अहिवाल से अगाही हूई । आप ने जो कुछ तहरीर फ़रमाया दरुस्त है, बहुत खुशी का वक्त है, जो कि इट्टारसी संगत याद करती है और करती रहेगी, यह प्यार नहीं पूरब का रिश्ता चल रहा है और चला जावेगा। कौण कहें तुम मेरे थे और मैं तुम्हारा था और अब फिर हूआ। आप पर बहुत किरपा नहीं की बलकि आप का कर्ज़ भी नहीं उतरा। अभी तक्क जुग परवान चढ़ाया है। बाकी जसवन्त की बात किआ लिखूं। तीन दफ़ा पिता पूत का रिश्ता बण चुका है दो दफ़ा अग्गे भी बणेगा। मैं इट्टारसी वालों का नहीं हूं मगर इट्टारसी वाले मेरे ज़रूर हैं । इस का भाव कि पूरब जन्म नहीं जाण सकते ..... बीबी अमरजीत कौर का फ़िकर ना करना जीओ। उन पर दया है और हूई। मेरी तरफ़ से सभ परिवार को सति श्री अकाल । आप को सति श्री अकाल, टोपन राम आप को प्यार।

★ ★ ★ ★ ★

३१-७-१९५३

जन भगत दुक्ख भुक्ख चिन्ता ग़मी गरीबी ताहने मेहणे से कदी नहीं डरदे आपणे रंग विच्च रते रहन्दे हन।

हज़ूर सच्चे पातशाह जी दे दस्तख़त

★ ★ ★ ★ ★

★ ★ ★ ★ ★

★ टोपन जी (इट्टारसी हरि संगत) नूं उस दे पत्र दा उतर ★

टोपन जीउ, आप का ख़त मिल गिआ है। फिकर ना करना। किआ घबरा गए। किआ राम ने बणबास नहीं काटा था। टोपन जी डरो मत । घबराओ नहीं सभ कुछ आप का है और होवेगा। टोपन भिखारी नहीं बलकि दाता है। दरवेस नहीं नरेश है । मुफ़लिस नहीं शाह है। फ़कीर नहीं पीर है । आत्मा नहीं परमात्मा है। छोटा नहीं बड़ा है । मैं आप को कौण सा रूप दूं कि आप क्या हो। मगर कुछ भी ना हो। मगर मेरा मेरे दातो ज़रूर हो। जब मैं ही आप का हो गिआ, बाकी किआ है। टोपन गुजारा चलेगा और चलता रहेगा । सभ कुछ हो जावेगा। मगर जो आप का दरजा है किसी चक्रवरती का भी नहीं है। मेरी तरफ़ से प्यार। अरजन मेरे पास ही है।

२५-३-१६५४

★ ★ ★ ★ ★

शब्द गुरसिखां दी दात है अते एहनां नूं ही प्राप्त हुंदी है जी। तुहाढ़े वास्ते ही धुरदरगाही सुगात आई है। बाकी संसार गूढ़ी नींद विच्च सुत्ता है जी।

हज़ूर सच्चे पातशाह जी दे दस्तख़त

★ ★ ★ ★ ★

★ ★ ★ ★ ★

★ सच्चे पातशाह जी वलों भाईआ बिशन सिँघ दे पत्र दा उतर ★

आप जी दा पत्र पुज्जा धन्वादी हां जीउ। आप ने जो कुछ लिखया है जी, कोई संदेह नहीं। आप जी दा नाता विधाता दा अन्तर जोड़ है जीउ। जिस दी कोई मिसाल संसार विच्च नहीं मिलदी कलम वी लिख नहीं सकदी। एह लेखा लिखण तों बाहर है । बुध्धी लिखण तों असमरथ है जीउ। तुसीं इस समें संसार विच्च जन्म ना लैंदे, तां ईश्वर नूं स्वांग रचन दी लोड़ ना पैंदी आप जी दा पूरबला कज़ा उतारन वास्ते अते संसार दी नवीं मरयादा नूं कायम करन वास्ते आप तों बगैर होर सरगुण रूप विच्च वस्तू वी केहड़ी है जीउ। इस समें इस जामें विच्च निरगुण दा सच्चा सरूप सरगुण सरूपी आप सच्चे गुरमुख हो जी जिनां दे प्रेम नाल प्रगट हुंदा है अते शब्द दवारा आप जी दा जस गौंदा है जीउ। मेरे वलों सारयां नूं सति श्री अकाल परवान होवे जी, बच्चयां नूं प्यार।

★ ★ ★ ★ ★

आप का ऊँच नीच जाति का भेद कभी ना लिखा करो नाही मैं इस ख्याल में आता हूं। जिस का हिरदा कँवल है, सभ से उत्तम उस की ज़ाता है । क्योंकि हर इक्क इन्सान के चार वरण हैं :

जब भगवान को याद करता है तो ब्रह्म है।
जब कोई चीज़ खरीदता है तो खत्री है।
जब ज़िमींदारी का काम करता है तों वैशय है।
जब टट्टी बैठ कर आपणा आप साफ करता है तो शूद्र हो जाता है।

हज़ूर सच्चे पातशाह जी दे दस्तख़त

★ ★ ★ ★ ★

★ ★ ★ ★ ★

(भाईआ बिशन सिँघ जी ने, पातशाह जी को पत्र में लिखा कि हज़ूर पातशाह जीउ हम तो सिफ़र हैं, सिफ़र के अग्गे जितनीआं वी सिफ़रां लगाईआं जाण, उन की कोई कीमत नहीं होती जब तक बाईं तरफ़ एका ना लगाया जावे। आप जी के बगैर हम सभ सिफ़र हैं । आप जी के बगैर हमारी कोई कीमत नहीं।)

आप जी दा धन्नवादी पत्र पुजा, बड़ी खुशी है जीउ । आप ने जो कुछ लिखया है सति है परंतू एह कोई अहसान वाली गल्ल नहीं। सिरफ़ आप जी दा हक़ मिल रिहा है जीउ उह वी पूरा नहीं होया। पता नहीं आप ने कितना जुग परवान कज़ा चढ़ाया है जीओ। तुहाढ़े संसार विच्च औण नाल, आप नूं आपणा सरूप बदलणा पैंदा है जी ? जगत दी मरयादा दा मुढ़ु आप ही हो जी। चार वरनां दा सिरताज, सच दी सूरत दा सच्चा सरूप गोबिन्द ने आप तों प्रगट कीता ते आप दे अग्गे हो के भिख्खया मंगी, अमृत लिआ उस वक्त आप तों। अमृत खब्बे हत्थ नाल लिआ सी क्योंकि सज्जा हत्थ तलवार वास्ते सी खब्बा बख्शिश वास्ते है जीओ। अज्ज समें दा उलट सज्जा हत्थ सज्जण नूं मिलण वास्ता, खब्बा हत्थ चरन धूड़ वास्ता है जी। जिस समें वास्ते आप नूं संग रख्या है उह संसार दी सति धर्म दी नींह की मैं लिख सकदा हां ? आप जी दा प्यार केसगढ़ दी तिखी धार विच्चों प्रगटा के भगवती भगवती दे नेत्रां विच्च खूंन दी धार दे थां अमृत बरसा देंदा है। गोबिन्द दे जिगर दिआं टोटिआं नालों उच्चा दरजा, पंचम दे रंग नाल रंगया है। आप ने उस समें नूं वेख्या है, हुण पता नहीं, माछूवाड़े दे दर्शन समें विछड़े होए मिलणा, उस समें दी हिरदिक चोट, जो आप नूं तिखा घाट करके लग्गी सी, आप ने विछोड़ा ना झल्लण वास्ते बेनन्ती कीती सी। उस समें पहले आप ने कौल कीता सी कि तेरा विछोड़ा नहीं रवेगा। तेरे वैराग विच्चों प्रगटी धार, पुकार बण के, आपणा हाल दस्सण वास्ते अकाल पुरख पास गई सी।

मित्र प्यारे नूं हाल मुरीदां कहणा तेरी पुकार गोबिन्द अग्गे सी ते गोबिन्द निरँकार अग्गे सी अगर आप बेनन्ती ना करदे शैद गोबिन्द नूं ईशवर ताणा कत्तण दी लोड़ ना पैंदी। इस विच्च कोई मैं नहीं कर रिहा, तेरा तेरी झोली विच्च पा रिहां हां जीउ। देह करके पग्ग होर क्यों ना किसे नाल वटा लई एथों अगला लेखा लिखण लग्गिआं दिल उछल आया है। अक्खां विच्चों आप दी प्यार दी धार,

सोमें बण के फुट्ट पई, अक्खीआं छाबर ला दित्ती, कलम ने चीख चिहाढ़ा पा दिता। प्रेम दा प्रेम कौण लिख सकदा है। क्यों सोहँ नूं मुख रख्या मैं आप जी दा लेखा की लिखां की ना लिखां, कोटन कोट ब्रह्मा चार मुखी गाइण ते फिर वी सोभा नहीं हो सकदी, तेरा रूप सति सरूप, सर्ब नूं प्यार।

(१) अकाल पुरख गोबिन्द एका रूप
(२) गोबिन्द पंज प्यारा
(३) पंचम प्यारा संगत अधार

★ ★ ★ ★ ★

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

साध संगत जीउ

पूरब विचार पढ़या।

गुर संगत जीउ, आप जी दी शुद्ध आशा अते प्रेम भावना आत्म अधार जन्म सुधार सर्ब परवार नूं सारिंगधर भगवान कृष्न जी दे अवतार माह दी वधाई होवे। एह शुद्ध ख्याल साध संगत दूई अते द्वैत नूं दूर करदा है जी । साडे नियम हुक्म अनुसार सर्ब संगत एकता दी रंगण विच्च होणी चाहीदी है। हिंदू सिख सर्ब करता खेल है। अन्तम भगत जन जोती मेल है जी। आप ने इस मरयादा नूं पूरन करन वास्ते अते प्रेम सागर दा उछाल दे के मनमुखां दी द्वैती कंध नूं ढाउणा है। सर्ब वरन नूं इक्क दे नाल मिलण दा राह विखौणा है जी। इक्क दूजे दा सच्चा संग निभाउणा है जी। मैं वी आप जैसी उजल संगत दा सेवादार जुगाँ परवान आया हां जी। गुरसिख नूं अठ्ठे पहर दे दरस हिरदक वास अते हर समें निरमानता गरीबी हलीमी मिलणसारी चाहीदी है जी। अते गुरसिख जीउ साध संगत दी सेवा करके, नेत्रां नाल दर्शन करके, मन दी दुबिधा मैल विकार हँकार आपणे आप नशट हो जांदा है। साध संगत दे दर्शन करन नाल सौ जन्म दा पाप कलिजुग विच्च उतर जांदा है जी। क्योंकि साध संगत दे सुंदर मुख अते पवित्र रसना विच्च सच्चे साहिब दे अनमुलड़े शब्द निकलदे हन जी। अते जो गुरमुख गुरसिख गुरमत अनुसार विहार करदा है, गुरमुख हो जांदा है। उस विच्चों सर्ब विकारी हँकारी तत्त नष्ट हो जांदे हन जी अते माण ताण इक्क भगवान दा हुंदा है जी। मैं कदे वी किसे नाल नाराज़ नहीं हुंदा ना होणा है जी। मेरे वल्लों सारी संगत नूं सति श्री अकाल ।

सच्चे पातशाह जी

★ ★ ★ ★ ★

★ हज़ूर शहनशाह जी वलों पत्रां दे उतर ★

२५-७-१९५३

जिस जीव नूं भाणा मन्नण दी ताकत होवे, अते परमात्म दे स्वांग नूं वेख के डोले ना अते जगत दे ताहने मेहणे नूं सत कर मन्ने आपणे प्रीतम दे प्यार दी धार दे वैराग विच्च कमले रमले ते झल्ले हो जाईए, फेर वी धन्न धन्न है गुरसिख, एह गुरसिक्खी दी धार है। आत्मा दे रस नाल जीव बेबस हो जांदा है । गुरसिख दा हिरदा परबत दी निआंई होणा चाहीदा है। सृष्ट डोल जावे पर गुरसिख ना डोले, दुःख नूं सुख जाणे, अते एह ही समझे तेरा कीता मैं जातो नाही मैं तन जोग दी तोई।

हज़ूर सच्चे पातशाह जी दे दस्तख़त

★ ★ ★ ★ ★

३१-८-१९५३

जो कुछ है बह आपने आप में ही है और आपणी आत्मा की आवाज़ से भी सभ कुछ समझ में आ सकता है। और गुरमुख को शब्द अधार, अते गुर चरन दा प्यार होणा चाहीदा है। और फिर जिस जगा भी है, नाम खुमारी चढ़ी रहती है। आप सभ कुछ जानते हो और मुझे आप जैसे प्रेमी सज्जणा नाल मिल के बड़ी खुशी रहती है।

हज़ूर सच्चे पातशाह जी दे दस्तख़त

★ ★ ★ ★ ★

२४-५-१९५४

बाकी सुरत शब्द मेल आप का यही है जो आप को मिल चुका है। क्योंकि प्रभ चरन ध्यान करने से शब्द की धार बज्झ जाती है और रसना गौंदी है जी। और हर वक्त पातशाह का हिरदे में ख्याल और डर रहिता है। और जिस जीव को दर्शन होते है उस का दस्म दवार खुला होता है। जब तक्क यह दवार ना खुले, उस वक्त तक्क दर्शन नहीं होते क्योंकि परमात्मा के अंदर आणे और जाणे का रास्ता यही है । शब्द की धुंन सुणाने का भी यही तरीका है।

हज़ूर सच्चे पातशाह जी दे दस्तख़त

★ ★ ★ ★ ★

★ ★ ★ ★ ★

१५-४-१९५७

आप जी दी मनो कामना शब्द धारा नाल पूरन होवेगी जी। सच्ची हट्टी चों सच वणज हो जावेगा जीउ।

अमृत आत्म बजर कपाट अकाश प्रकाश शब्द धुंन आत्म सुन्न अगाध बोध आप जी दी आपणी सफ़लता दी प्राप्ती है जी। ज़रूर भावना पूरी होवेगी जीओ। पत्रका संभाल के रक्ख लई है जी।

हज़ूर सच्चे पातशाह जी दे दस्तख़त

★ ★ ★ ★ ★

१९-७-१९५४

जिस जगा पर पातशाह का फोटो है पलघँ पर उस के उप्पर कोई मसताना नहीं चढ़ेगा। क्योंकि जिस के उप्पर फोटो है उस दे उप्पर इस वक्त सिरफ़ एक पूरन सिँघ का सरीर लेकर हम चढ़ेंगे दूसरा कोई नहीं चढ़ेगा। और जो बचन भी लखाए जावें वे नीचे बैठ कर। अगर मस्ताने ने पलँघ पर चढ़ना होवे तो दूसरे मंजे उप्पर बैठ सकते हैं, पातशाह के नाम पर लगे हूए पलँघ पर नहीं । यह हुक्मनामे मैं सारी संगत को भेज रहा हूं ताकि कोई गलती ना करे। क्योंकि यह २७ (सताई) साल तक्क ऐसा चलेगा । बाकी जोड़ मेला एक राए कर के मनाया जावे क्योंकि अगर कोई आदमी आया होवे तो उस को भी बुरा ना लगे। यह मशवरा पहले से किया जावे, भोग पातशाह के फोटे को लगाया जावे किसी आदमी को नहीं।

हज़ूर सच्चे पातशाह जी दे दस्तख़त

★ ★ ★ ★ ★